

रवींद्रनाथ टैगोर की चुनिंदा लघु कथाओं में आत्मसम्मान एवं संचार की भावना

सहायक प्रोफेसर – डॉ. निशा रामपाल

हिंदी विभाग

गुजरात विश्वविद्यालय

रवींद्रनाथ टैगोर, जिन्हें साहित्य में एशिया में पहले नोबेल पुरस्कार मिला था, ने साहित्य के अलावा दर्शन, संगीत और शिक्षा में भी अनेक प्रकार से योगदान किया है। उन्होंने परिवार, प्रेम, महिला और बच्चे की मानसिकता जैसे विभिन्न विषयों पर ध्यान दिया है, चाहे वे स्वचालित रूप से हो या अन्यथा। उन्होंने मानव संबंधों पर बल दिया है। सम्पर्क में रहने और रखने के लिए संचार का महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसकी कमी का कहना कमी है। अपनी स्वाभिमान सुरक्षित रखने के लिए लोग सख्त उपाय अपनाते हैं। कभी-कभी, यह मानसिक और भावनात्मक तंगी का कारण बन सकता है, लेकिन कुछ मामलों में, यह जीवन के मृत्यु को जीवन के अधिकार मान सकता है। संवाद की कमी से होने वाली समस्याएं टैगोर के पात्रों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। पोस्टमास्टर और दी घाट की कहानी इसी प्रकार की कहानियां हैं जिनमें पात्रों को संवाद की कमी के कारण कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। यह लेख पाठयिकी विश्लेषण करता है ताकि "स्वाभिमान" और "संवाद की कमी" के बीच संबंध का विश्लेषण किया जा सके। इसमें मूल्यांकन किया जाता है कि अगर पात्रों ने एक-दूसरे से संवाद किया होता तो क्या होता। इसके अतिरिक्त, यह संवाद की अभावना के महत्व पर भी विचार करता है, ताकि पाठक में इच्छित भावनाओं को प्रकट किया जा सके।

कीवर्ड: संचार की कमी, रवींद्रनाथ टैगोर, आत्म-सम्मान, लघु कथाएँ, विषयगत अध्ययन

साहित्य दुनिया को बहुत कुछ देने में सक्षम है। यह सिद्धांत है कि यह समाज का परिचायक है। इसका अर्थ है कि साहित्य में पात्र और घटनाएं सीधे या परोक्ष रूप से उन प्रमुख संसार से प्रेरित हैं जिसमें लेखक का संपर्क होता है। रवींद्रनाथ टैगोर ने साहित्य के अलावा दर्शन, संगीत और शिक्षा में भी अनेक प्रकार से योगदान किया है। उन्होंने साहित्य में एशिया में पहला नोबेल पुरस्कार जीता था। उन्होंने कविता रची, नाटक लिखे, उपन्यास और लघुकथाएं भी लिखी। टैगोर की कहानियां अपील करती हैं क्योंकि वे वास्तविकता के बहुत करीब आती हैं, जैसे कि घोष कहते हैं, "जीवन में कलाकार, वे केवल एक लेखक नहीं थे। आधुनिक भारतीय साहित्य के निर्माताओं में से एक नहीं, रवींद्रनाथ टैगोर आधुनिक भारतीय मस्तिष्क और सभ्यता के भी निर्माता थे [1]।" इस लेख में दो उनकी अनेक कहानियों में से दो पर ध्यान केंद्रित होगा: "पोस्टमास्टर" और "दी घाट की कहानी।" ये कहानियां मूल रूप से बंगाली में लिखी गई थीं और बाद में शर्मिष्ठा मोहंती द्वारा अंग्रेजी में अनुवाद की गईं। अनुवाद कभी-कभी मूल के द्वारा बनाए गए प्रभाव को खो सकते हैं। कभी-कभी अनुवादक अपने सर्वोत्तम कार्य करने के लिए बहुत सचेत होते हैं, जिसका नकारात्मक परिणाम भी होता है। हालांकि, जॉय गोस्वामी के अनुसार, "इस अनुवाद में, रवींद्रनाथ की कहानियों के माध्यम से उन्हें

खोजना मिलता है। यह बहुत महत्वपूर्ण बात है।” इस बात में ध्यान देने योग्य है कि यह अनुवाद मूल के प्रति वफादार रहता है।

यह पेपर इन लघुकथाओं में प्रस्थित विषयों पर ध्यान केंद्रित करता है। जैसे ही लोग और उनके जीवन का अध्ययन किया जा सकता है, वैसे ही एक पाठ के विभिन्न घटकों का अध्ययन भी किया जा सकता है। संरचना, सेटिंग, पात्र, विषय और भाषा उनमें से कुछ हैं। साहित्यिक कार्यों का विश्लेषण केवल पाठ की शरीर की रचना को समझने के लिए ही नहीं, बल्कि इसके पीछे की आत्मा को समझने के लिए भी किया जाता है। संरचना पाठ की हड्डी-कंकाल होती है, पात्र और भाषा मांस-रक्त बनाते हैं, जबकि विषय आत्मा होता है। विषय “मुख्य विचार या प्रस्ताव्य मुख्य विचार्य समग्र कहानी द्वारा प्रकट या सीधे रूप से घोषित अंतर्निहित अर्थय सामान्य दृष्टिकोण जिसे सारी कहानी द्वारा उजागर किया गया है, मुख्य सत्यय प्रमुख विचार्य व्यक्ति, कार्य और छवि के माध्यम से रूपांतरित अंतरात्माय सार्वभौमिक विचार जो अभिव्यक्ति में साकार होता है।” विषय स्पष्ट नहीं होते हैं लेकिन वे किसी भी पाठ को जीवंत बनाते हैं।

शोधकर्ताओं ने रवींद्रनाथ टैगोर के कामों के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया है। डॉ. एस. चेल्लैया ने उनकी लघुकथाओं में मनोविज्ञान के विभिन्न पहलुओं को समझने और उन्हें प्रतिबिंबित करने में कुशलता दिखाई है। उन्होंने कहा है कि टैगोर बच्चों की असहायता को बड़ों द्वारा निर्मित एक क्रूर दुनिया के सामने अच्छी तरह से चित्रित करते हैं, जो उनकी कोमल भावनाओं को समझने में असमर्थ रहते हैं। कुछ लेखक महिला दृष्टिकोण से टैगोर के कामों का विश्लेषण करते हैं और टिप्पणी करते हैं कि वह समाजिक प्रतिबंधों का उल्लंघन करते हैं जो महिलाओं के लिए निर्धारित किए गए थे और कैसे उन दशकों में महिलाओं के लिए परिस्थितियां अनुकूल नहीं थीं, जो नवां और बीसवीं शताब्दी में थे। मालाश्री लाल टैगोर द्वारा प्रस्तुत ‘अन्य’ की अवधारणा का अध्ययन करते हैं। उन्होंने कहा है कि टैगोर अपने काम के माध्यम से विभिन्न प्रकार के शून्य को एकत्रित करने का प्रयास करते हैं, वे अपनी संवेदनाओं और सहानुभूतियों के साथ संयुक्ति की खोज करते हैं। “द पोस्टमास्टर” और “द गंगा घाट”, या जैसा कि इसे दूसरे नाम से भी जाना जाता है, “द रिवर स्टेयर्स,” के साथ अन्य लघुकथाओं का वैश्लेषिक परिप्रेक्ष्य और मुख्य पात्र होने के कारण उनके मानसिक और भावनात्मक संदेहों का भी विश्लेषण किया जाता है। मोहम्मद कयूम ने फ्रॉयडियन पढ़ाई करते हुए टैगोर की भाषा में श्मजाकश के विषय का अध्ययन किया है [2]।

यह लेख रवींद्रनाथ टैगोर की चुनी हुई लघुकथाओं में से एक अन्धापन थीम का अध्ययन है। संचार एक व्यक्ति के जीवन का बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है, यह वाचिक या अवाचिक दोनों हो सकता है। संचार संबंधों को बनाए रखने और विकसित करने में भूमिका निभाता है। हम जन्म से ही किसी न किसी तरह संचार की शुरुआत करते हैं। संचार के बिना कुछ भी नहीं किया जा सकता। कभी-कभी संचार की कमी भी बहुत कुछ कह देती है। वे अपनी आंतरिक विचारों को रूप देने के लिए अपनी आवाज का उपयोग करने में असमर्थ होते हैं। उन्हें संचार से विचलित करने वाली मुख्य बात आत्मसम्मान है। आत्मसम्मान एक व्यक्ति के कुल स्व-मूल्यांकन को संदर्भित करता है। व्यक्ति की सामाजिक भूमिका, आर्थिक स्थिति, वर्ग, और लिंग जैसे विभिन्न पहलुओं का उनके आत्मसम्मान पर प्रभाव होता है। फिर, आत्मसम्मान व्यक्ति के धारणा, व्यवहार, और उनके सम्पूर्ण जीवन पर प्रभाव डालता है, विशेष रूप से जब इन्हें साथ में

देखा जाता है। संबंध विकसित और बनाए रखने के लिए, व्यक्ति को अपनी भावनाओं और भावनाओं को व्यक्त करने की आवश्यकता होती है ताकि गलतफहमियां रोकी जा सकें। हालांकि, जैसे ही आत्मसम्मान व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करता है, व्यक्ति चुप्पी को बोले के स्थान पर चुन सकता है। इस संचार की कमी से संबंधों के टूटने, गलतफहमियों, असंवादितता और यहाँ तक की मौत का समाधान होता है। चयनित लघुकथाओं में पात्रों ने अपने आत्मसम्मान को अपने निर्णयों पर प्रभाव डालने दिया। इससे संबंधित पक्षियों के लिए भावनात्मक और मानसिक अराजकता होती है [3]।

सामंतराय, एस. (2013) मिस्टिसिज्म का एक सामान्य व्याख्यान यह है कि यह एक आत्मिक खोज है जो छिपी सत्य या ज्ञान की ओर की तलाश करती है, जिसका अंतिम उद्देश्य पारलोकीय दुनिया के साथ एकता को प्राप्ति है। माना जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति के मिस्टिक अनुभव अद्वितीय और बिल्कुल अद्वितीय होते हैं। फिर भी, हम देखते हैं कि मिस्टिक्स के अनुभव में एक प्रभावशाली समानता है, न केवल उन लोगों में जो एक ही जाति या धार्मिक समूह से हैं, बल्कि उन लोगों में भी जो विभिन्न सामाजिक समूहों और धार्मिक परंपराओं से संबंधित हैं। पश्चिमी कवि विलियम ब्लेक और पूर्वी कवि रवींद्रनाथ टैगोर के कामों के संदर्भ में, यह शोधपत्र मिस्टिसिज्म के धारणा का अध्ययन करता है और इसे उनके आत्मविश्वास में देखता है। अलग-अलग देशों में जन्मे होने के बावजूद, उन्हें आध्यात्मिक संबंध होने का अनुभव होता है। विलियम ब्लेक की अधिकांश चित्रकारियाँ बाइबल पर आधारित छवियों पर आधारित हैं, लेकिन उनके कामों का शैली और व्यापकता अपोकलिप्टिक है। टैगोर द्वारा भारतीय आध्यात्मिक दर्शन की तरफ से एक प्रणाली है, जो भगवद गीता का देवतावाद, वेदों और उपनिषदों की धार्मिकता, बौल्स की मिस्टिसिज्म, और वैष्णवत्व और सूफीज्म के तात्विक सिद्धांतों का संकलन है। टैगोर की प्रणाली इन विभिन्न दार्शनिक अवधारणाओं का सम्मिलन है। उनके कामों का विस्तृत विश्लेषण दिखाता है कि विविधताओं के बावजूद, ब्लेक और टैगोर के कवितात्मक दृष्टिकोण एक साथ आ सकते हैं। इसे उनकी कवितात्मक कला, क्राफ्ट, और ओवर के माध्यम से प्राप्त किया जाता है, जबकि साथ ही साथ सांस्कृतिक विवादों और राष्ट्रवादी दावों को छोड़ दिया जाता है। मिस्टिसिज्म और पारलोकीयता के अवधारणाओं को उनकी लिरिकल कामों में सबसे प्रमुख रूप से प्रस्तुत किया गया है। यहां तक कि उनके इसे प्रस्तुत करने के तरीके बहुत विभिन्न और विविध हैं, और उनका प्रतीकात्मक भी अलग है, उनकी लिखी कविताओं में एक सामान विषयात्मक उद्देश्य होता है, जो कि मिस्टिसिज्म होता है [4]।

हक, के. (2010) इस लेख का उद्देश्य रवींद्रनाथ टैगोर को एक विचारके रूप में एक व्यावहारिक और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करना है। इस दृष्टिकोण में उनके धार्मिकता और मिस्टिसिज्म पर उनके दृष्टिकोण, साथ ही राजनीतिक सिद्धांत और लिंग संबंधों जैसे अधिक व्यावहारिक विषयों को भी ध्यान में लिया जाएगा। टैगोर के यथार्थ की प्रकृति के बारे में उनकी प्रसिद्ध विवादित मुद्दे के साथ शुरू करके, इसे उनके दार्शनिक आदर्शवाद की अनूठी विशेषताओं की पहचान करता है, इसलिए विलियम रेडिस द्वारा प्रस्तावित प्रतिवाद को खंडन करता है। अगले अनुभाग में, टैगोर के मिस्टिसिज्म और उनके बंगाल के बौल्स के संबंध को सुधीर काकर के मनोसामाजिक दृष्टिकोण के संदर्भ में जांचा जाता है। इस लेख में, टैगोर की भौतिकवाद और उनके विशेष महिलावादी दर्शन के बीच का संबंध जांचा

जाता है। अंत में, नैतिकता की आलोचना के लिए टैगोर और नीचे की तुलना की जाती है। इसको आशिस नांडी की सोच के प्रकाश में और टैगोर और नीचे की तुलना करके किया गया है [5]।

टैगोर, आर. (2011) रवींद्रनाथ टैगोर, एक कवि, लेखक, और दार्शनिक जिन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था, इस विशेष लेख के माध्यम से भारतीय संस्कृति के प्रति बाकी दुनिया के प्रतिनिधित्व करते थे। उन्हें एशिया से नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले पहले व्यक्ति के रूप में माना जाता है, और उन्हें भारतीय उपमहाद्वीप के सांस्कृतिक विश्व में सबसे प्रभावशाली व्यक्ति माना जाता है। उनकी बहुमुखी कला का प्रदर्शन विभिन्न कलात्मक माध्यमों में किया गया, जिसमें उपन्यास, लघुकथाएँ, नाटक, लेख, निबंध, चित्रकला, और इस तरह की अन्य कलाएँ शामिल हैं, हालांकि उनका कविता क्षेत्र में योगदान सबसे अधिक माना जाता है। इसके अलावा, उनके गीत जिन्हें अक्सर रवींद्रसंगीत के रूप में संदर्भित किया जाता है, अनन्त आकर्षण रखते हैं और बंगालियों के दिलों में मजबूती से अंकुरित हैं। उन्हें सबसे पहले एक महान मानववादी और दार्शनिक माना जाता था, जो कि सामाजिक सुधारक और एक राष्ट्रभक्त भी थे। उनके काम से भारत और बांग्लादेश दोनों का राष्ट्रीय गान बना है [6]।

- जांचें कि संचार, या उसकी अनुपस्थिति, टैगोर की लघु कथाओं में पात्रों के अपने और दूसरों के प्रति धारणाओं को कैसे आकार देता है, जिससे उनके स्वाभिमान और रिश्तों पर प्रभाव पड़ता है।
- असफल संचार के कारण होने वाली गलतफहमियों की जांच करें, और इससे पात्रों के स्वाभिमान और उनके दूसरों के साथ व्यवहार में कैसे प्रभाव आता है टैगोर की कहानियों में।
- पुनरावृत्ति के स्वाभिमान के महत्वपूर्ण विषयों की पहचान करें, जिनमें स्वाभिमान, आत्ममूल्य, पहचान, और सामाजिक स्वीकृति शामिल हैं, टैगोर की लघु कथाओं में।
- चर्चा करें कि ये विषय कैसे पात्रों के संवादों और निर्णयों के माध्यम से विकसित होते हैं, जो संचार गतिविधियों द्वारा प्रभावित होते हैं, टैगोर की कहानियों में।
- मूल्यांकन करें कि टैगोर कैसे कहानी रचना, पात्र विकास, और प्रतीकवाद जैसे कथात्मक तकनीकों का उपयोग करते हैं, अपनी लघु कथाओं में स्वाभिमान और संचार की जटिलताओं को प्रस्तुत करने के लिए।

रवींद्रनाथ टैगोर की लघु कथाओं में स्वाभिमान और संचार का अध्ययन कई तरीकों से महत्वपूर्ण है। नोबेल पुरस्कार विजेता टैगोर की कहानियाँ मानव मनोविज्ञान और रिश्तों को प्रकाश डालती हैं। विद्वान अपने विषयों और कहानी साझा करने के तरीकों को अध्ययन करके उनको बेहतर रूप से समझ सकते हैं। ये विषय शताब्दी बंगाली संस्कृति में गहरे रूप से प्रवेश करते हैं, जो दिखाते हैं कि सांस्कृतिक निर्देशक रिश्तों और पहचानों पर कैसे प्रभाव डालते हैं [7]।

टैगोर की व्यक्तियों की स्वाभिमान और संचार से संघर्ष का वर्णन मानसिक स्वास्थ्य पर उनके प्रभाव की महत्वपूर्ण जांच के लिए रोमांचक मंच प्रदान करता है। ये विषय समय और स्थान को पार करते हैं, और सांस्कृतिक समझदारी और समझ बढ़ाते हैं। अंतरराष्ट्रीय साहित्य में मुख्य पात्र के रूप में, टैगोर की रचनाएँ गंभीर जांच और साहित्य सिद्धांत और आलोचना को समृद्ध करती हैं।

टैगोर की कहानियाँ साहित्य, मानसिक विज्ञान, और सांस्कृतिक अध्ययन के पाठ्यक्रम में सुधार करती हैं। उनकी कहानियाँ संचार विफलताओं और स्वाभिमान पर प्रश्न उठाती हैं, और व्यक्तिगत और बहुपक्षीय गतिविधियों के बारे में। टैगोर की लघु कथाओं में ये विषय हमें उनकी साहित्यिक विरासत के समझने में मदद करते हैं, और मानव प्रकृति और सामाजिक कठिनाइयों के बारे में शाश्वत सत्यों को दर्शाते हैं, जो इसे विद्यार्थी अनुसंधान का महत्वपूर्ण विषय बनाते हैं {8}।

यह पेपर एक व्यापक मार्गदर्शन का उपयोग करता है टैगोर की लघु कथाओं में स्वाभिमान और संचार गतिविधियों का विश्लेषण करने के लिए, खासतौर पर पद पोस्टमास्टर और पद घाट्स टेल पर ध्यान केंद्रित करते हुए। निकट पाठात्मक विश्लेषण के माध्यम से, यह जांचता है कि वर्बल और नॉन-वर्बल संचार दोनों प्रकार से कैसे पात्रों की स्व-परिचय और रिश्तों को आकार देता है। विषयात्मक विश्लेषण टैगोर की रचनाओं में स्वाभिमान और संचार के पुनरावृत्ति और महत्व को पहचानता है। मानसिक विज्ञान जैसे तत्वों से प्रेरित, यह समझता है कि संचार गतिविधियों से प्रभावित पात्रों के व्यवहार का व्याख्यान करते हुए, उनके मानसिक भले-बुरे का अध्ययन करता है और कथात्मक चुनौतियों को। तुलनात्मक विश्लेषण इन विषयों को टैगोर की कथाओं और अन्य साहित्यिक रचनाओं के बीच तुलना करता है, जबकि सांस्कृतिक संदर्भ की खोज समाजीय निर्देशकों के संचार और स्वाभिमान के प्रतिबिंब पर कैसे प्रभाव डालती है। इस बहुआयामी प्रस्तुति का उद्देश्य है टैगोर की मानव गतिकी की साहित्यिक चित्रण की एक सूक्ष्म समझ प्रदान करना, साहित्य, मानसिक विज्ञान, और सांस्कृतिक अध्ययन में अनुशासित अनुमोदन के माध्यम से।

“पोस्टमास्टर” में एक युवा व्यक्ति का वर्णन है जो ग्रामीण क्षेत्र में एक पोस्टमास्टर के रूप में पदस्थ होता है। शहरी जीवन से अभ्यस्त होने के बावजूद, उसे उलापुर के “निरर्थक गाँव” में मछली की तरह पानी के बाहर महसूस होता है। रतन, बारह या तेरह वर्ष की एक अनाथ लड़की, उसकी घरेलू चीजों में मदद करती है और नियमित भोजन के बदले में। उसके पास परिवार था, माता-पिता और छोटे भाई। इसके बारे में क्या हुआ, यह उल्लेख नहीं है, लेकिन किसी का मानना है कि इतनी छोटी उम्र में अपने परिवार को खोने से उसका पोस्टमास्टर के साथ आसक्ति में योगदान था {9}।

दूसरी ओर, युवा व्यक्ति को मानव स्पर्श की योग्यता की कमी होती है और कभी-कभी उसे यह इच्छा होती है कि “अब उसके पास कोई होता जो वास्तव में उसका होता—उसके दिल के संग एक, प्यार का एक कोमल वस्त्र एक मानव आकृति।” रतन उसके लिए बस एक अशिक्षित छोटी अनाथ लड़की थी। अपनी अकेलापन को और उपयुक्त तरीके से नियंत्रित करने के लिए, उसने रतन को बताया कि वह उसे पढ़ाना और लिखना सिखाएगा। कुछ शाम, उसने इस छोटी लड़की के साथ अपने विचारों और अपने परिवार की यादों को भी बहाया। शीघ्र ही वह अपने परिवार को उसका खुद का मानने लगती है। जब उसे बीमारी होती है, तो वह माँ की तरह उसकी देखभाल करती है। हालांकि, पोस्टमास्टर को इस समय अपने चारों ओर अपने परिवार की इच्छा होती है। रतन की उपस्थिति उसके लिए सच्ची नहीं थी और मायने नहीं रखती थी। उसके ठीक होने के बाद, उसने स्थानांतरण के लिए आवेदन किया और जब वह

अस्वीकार हो गया, तो उसने अपनी नौकरी छोड़ दी। कार्यालय के साथ इस संचार की प्रतीक्षा में, उसने रतन को पढ़ाना बंद कर दिया। उसे उसके विचारों में ध्यान देने के लिए पर्याप्त महत्व नहीं था।

अपने रवाना होने के दिन, उसने रतन से बताया कि वह जा रहा है। इस सूचना से अत्यधिक व्याकुल होकर, वह कुछ नहीं कहती। उस दिन के बाद वह उससे पूछती है कि क्या वह उसे साथ ले जाएगा। वह केवल हँसता है और कहता है कि यह संभव नहीं है। उसके भावनात्मक उथल-पुथल के अभाव के कारण, उसे और ज्यादा स्पष्टीकरण की आवश्यकता महसूस नहीं होती। हालांकि, वह रतन को यकीन दिलाता है कि वह अगले पोस्टमास्टर से उसका अच्छा ख्याल रखने की सलाह देगा। अपने त्याग की भावना से उबरते हुए, उसके कोमल शब्द उसे केवल चुभते हैं और वह उस पर उठ पड़ती है, ज़िन्दा, नहीं, आपको किसी को कुछ बताने की आवश्यकता नहीं है, मुझे यहाँ रहना नहीं है। उसके व्यवहार से हैरान होते हुए, वह और कुछ नहीं कहता। रवाना होने से पहले, उसने यात्रा के लिए कुछ पैसे रखने और अपनी बाकी वेतन रतन को देने का निर्णय लिया। वह उसके पाँवों में गिर पड़ती है रोते हुए, फिर उसने उससे कुछ भी लेने से इनकार कर दिया और भाग खड़ी हो गई {10}।

फिर भी अपनी भावनाओं को समझने में असमर्थ, अध्यक्ष जा जाते हैं। गाँव से दूर ले जाने वाली नाव पर, उन्हें अनिश्चितता का चेहरा याद आता है। उनके दिल में दर्द होता है और वह वापस जाकर अनाथ लड़की को साथ ले जाने का इच्छुक होते हैं, लेकिन यह बहुत देर हो चुकी है। उनके मन में संबंधों की स्थायित्व के बारे में दार्शनिक विचार बहने लगते हैं जैसे कि वह श्मशान घाट देखते हैं। दूसरी ओर, सीमित बुद्धिमत्ता वाली रतन अक्सर पोस्ट ऑफिस में वापस आती है, उम्मीद में कि उसका दादाबाबू उसके लिए लौट आए हैं, बिल्कुल भी दार्शनिक विचार नहीं। इस कहानी में, पात्रों के बीच या रोमांटिक संबंध या पारिवारिक संबंध नहीं हैं। हालांकि, एक युवा अनाथ लड़की और एक अकेले युवा पोस्टमास्टर के बीच एक बंधन विकसित होता है। वह उसे शब्दों और क्रियाओं में उदार है। फिर भी, उसका संबंध उसके साथ पेशेवर है, और वह उसे परिवार के रूप में नहीं देखता। उसे लड़की के खिलाफ कोई आपत्ति नहीं है। वह उसके लिए सिर्फ एक घरेलू सहायक है और उसे इस बात का कभी भी विचार नहीं करता है कि लड़की को किसी और तरह से देखना चाहिए। इसलिए, जब वह रवाना होता है, तो उसमें एक अचानक इच्छा होती है कि लड़की को साथ ले जाए। फिर भी, वह उसके लिए इसे लम्बे समय तक विचारने के लिए पर्याप्त महत्वपूर्ण नहीं है। उसे दार्शनिक विचार आते हैं कि किसी का कोई किसी का नहीं होता है। उसकी आत्म-सम्मान उसे उसके पास लौटने से रोकता है {11}।

दूसरी ओर, रतन अपने दादाबाबू को अपनी दुनिया बना लेती है। वह, जिसने बचपन में अपने परिवार को खो दिया था, इस आदमी से जुड़ जाती है जो उसके साथ अच्छा व्यवहार करता है, उसे खिलाता है, और पढ़-लिखना सिखाने में दिलचस्पी लेता है। उसकी दुनिया सरल है। उसके पास उसके अलावा कोई नहीं है, सिर्फ उसका दादाबाबू। उसे वह भोजन और आश्रय जो वह उसे प्रदान करते हैं, से संतुष्ट है। उसे कभी उससे कुछ अधिक की उम्मीद नहीं होती। हालांकि, जब उसके दादाबाबू गाँव छोड़ने और उसे छोड़ने का फैसला करते हैं, तो उसे समझ में नहीं आता कि इसे कैसे समझना चाहिए। जब उसे बताते हैं कि वह उसे साथ नहीं ले सकते, तो उसे समझ में नहीं आता कि शक्यता यह

समस्या हो सकती है। अचानक अपने दादाबाबू और खुद के बीच की दूरी को महसूस करते हुए, उसके पास बची हुई हिम्मत है, वह श्वयं नहीं पूछने के लिए। इस घटना के बाद, कहानीकार भी इसे अपने मालिक के रूप में संदर्भित करना शुरू करते हैं और दादाबाबू नहीं। वह पुनः अनाथ महसूस करती है। उसकी आत्म-सम्मान उसे अपनी भावनाओं को उससे साझा करने से रोकता है। उसके निर्मल होने के बावजूद, उसके दिल में हल्का सा आशा बनी रहती है। वह महसूस करती है कि वह वापस आएगा और जब उसके दादाबाबू छोड़ जाते हैं, तो वह पोस्ट ऑफिस के आस-पास घूमने जारी रखती है।

“Ghat's Tale,” जिसे “The River Stairs” के रूप में भी जाना जाता है, में गंगा घाट को व्यक्तिगत रूप से व्यक्त किया गया है। घाट ने दशकों से कई लोगों को देखा है, लेकिन वह एक विशेष युवा लड़की, नाम से नामित कुसुम, की कहानी सुनाने का चुनाव करता है। उसने इस लड़की को छोटी से शरारती, लेकिन प्यारी बच्ची के रूप में देखा है। वह छोटी आयु में विवाहित हो जाती है और अठहारे वर्ष की उम्र में विधवा हो जाती है। उसके सभी दोस्त अपने ससुराल वालों के साथ एक के बाद एक जाते हैं। वह अपने रंगहीन जीवन को जीती रहती है और दस वर्ष बीत जाते हैं। दस साल बाद एक सुबह, एक सन्यासी घाट पर आता है। उसमें एक करिश्माई व्यक्तित्व होता है और जल्द ही लोग उससे मिलने के लिए अन्य स्थान से भी आते हैं। कुछ लोग, जो कुसुम के ससुराल से आते हैं, उस सन्यासी में कुसुम के पति के साथ समानता का चर्चा करते हैं। कुसुम अब घाट पर आना बंद कर देती है क्योंकि अब यह बहुत भीड़ भड़की होता है, और सन्यासी से मिलना नहीं होता। लेकिन, एक शाम, वह पूरे चाँदनी रात के घाट पर आती है और उनका आखिरकार मिलता है। उन्हें एक-दूसरे को देखते ही लगता है “कि वे पिछले जन्म में एक-दूसरे को जानते हैं।”

अगले दिन से, कुसुम सन्यासी के पास जाती है और उनके शास्त्र और धर्म पर भाषण सुनने के लिए। दिन बीतते जाते हैं, और उसका जीवन बदल जाता है और वह फिर से रंग देखने लगती है। हालांकि, जब कुसुम अचानक घाट आना बंद कर देती है, तो सन्यासी उसे बुलाते हैं और उसकी ध्यानाकर्षण “भगवान की सेवा के प्रति” के बारे में पूछते हैं। बहुत सी जांच के बाद, वह एक पापी होने का इतिराफ करती है। उसने उसे एक सपना देखा था, जिसमें उसने किसी को भगवान माना था, अपने प्रिय के रूप में। जैसे ही उसकी प्रतिक्रिया आती है, ऐसा लगता है कि सन्यासी समझ जाते हैं कि कुसुम ने किसे सपने में देखा था, लेकिन उन्हें उसे कहने की जरूरत होती है। उसने अपने सपने में सन्यासी को देखा था। इसके बाद, उन्होंने उसे आखिरी बार आदेश दिया, “... मैं आज यहां से चला जाऊंगा। हम फिर कभी नहीं मिलेंगे। तुम्हें मुझे भूलने की कोशिश करनी होगी। मुझे बताओ कि तुम इसे करने की कोशिश करोगी। वह सहमत हो जाती है और उसे घाट पर छोड़ देते हैं। उसने उसके भूलने के आदेश को दोहराया और पानी में चली जाती है {12}।

इस कहानी में, लड़की और संन्यासी के बीच में सही तरीके से संवाद नहीं होता। साफ है कि संन्यासी को कुसुम की भावनाओं के बारे में पता है। जैसे ही वह उसे देखता है, उसे कुछ महसूस होता है। हालांकि, उसकी आत्मसम्मान उसे अपनी भावनाओं को स्वीकार करने से रोकता है क्योंकि उसने भगवान की सेवा के लिए कुछ मानव इच्छाओं को त्याग

दिया है। रात कुसुम अपने सपने के बारे में स्वीकार करती है, तब उसे संन्यासी को वह पहचान लेता है, लेकिन वह चाहता है कि वह उसे शब्दों में व्यक्त करे। जब वह उसका अनुसरण करती है, व्याख्या की बजाय, उसने उसे भूलने के लिए एक अन्य अंतिम आदेश दिया है। दूसरी ओर, कुसुम एक युवा विधवा है, जिसने कभी प्यार महसूस नहीं किया। वह संन्यासी के साथ पहले संवाद में एक निश्चित संबंध महसूस करती है। कहानी से स्पष्ट होता है कि इस घटना का दशकों पहले हुआ था, जब नियम विधवा पुनर्विवाहों को नकारते थे। इसके अलावा, संन्यासी से प्रेम में पड़ना एक बड़ा पाप माना जाता है, जैसा कि उसने भी उल्लेख किया। इस बात को जानकर, उसकी आत्मसम्मान उसे संन्यासी को भूलने के लिए मजबूर करता है [13]।

“पोस्टमास्टर” में, दोनों पात्र एक-दूसरे के परिप्रेक्ष्य को समझने में असमर्थ रहते हैं और अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में भी असफल रहते हैं। अंत में, वे निराशा में लिप्त होकर अकेले छोड़ दिए जाते हैं। अगर केवल वह उसे बता पाती कि वह उसके साथ क्यों जाना चाहती थी। शायद उसने इसे विचार किया और उसे अपने साथ ले लिया होता। यह महत्वपूर्ण है कि आत्मसम्मान ऐसे अहंकारी आत्मा के रूप में उपयोग नहीं किया जाता, जहां किसी अन्य के प्रति सुप्रीम अहंकार महसूस होता है। यहां, आत्मसम्मान उस स्व-प्रतिमा के दृष्टिकोण में उपयुक्त है जो व्यक्ति अपनी दृष्टिकोण का निर्माण करता है [14]। “घाट की कहानी” में, संन्यासी कभी भी उससे इस बात के लिए नहीं कहता कि वह अपने जीवन को त्याग दे। उसने उसे बस “प्रयास करने” के लिए कहा कि वह उसे भूलने की कोशिश करे। हालांकि, जानते हुए कि वह इसे नहीं कर पाएगी और उसका जीवन सदा के लिए रंगहीन रहेगा, वह नदी में चली जाती है। अगर केवल कुसुम के पास कोई था जिससे वह अपने भय और भावनाओं को साझा कर सकती थी, तो शायद उसने अपने आपको नहीं मारा होता। अगर केवल संन्यासी ने एक अलग फैसला लिया होता, शायद उसे स्वीकार किया या कम से कम उसे स्थिति को बेहतर तरीके से समझाया होता, तो अंत भिन्न होता। हालांकि, उसने बहुत कम शब्दों का चयन किया और उसने कोई भी नहीं चुना। इसके कारण उनके बीच की इस संवाद की कमी के कारण, और उनके निकट सम्बंधियों के बीच की कमी के कारण, उसकी जान गई।

यह तथ्य कि ये दो कहानियां श्लघुकथाएँ हैं और उपन्यास नहीं, इन्हें समाप्ति पर पाठक पर कैसा प्रभाव डालता है, यह भी सहायक होता है। लघुकथा “संक्षेप और जटिलता के बीच रचनात्मक लेन-देन की विचारधारा है – कम कहने की कला, लेकिन अधिक”। इनके रूप में लघुकथाओं में, कोई भी स्थान नहीं था कि पात्र और अधिक आपस में बातचीत कर सकते, या पाठक को इस विशेष कथन के बाद पात्रों के साथ हुआ कुछ का पता चल सकता है। प्लॉट, पात्र, और स्थापना जैसे प्रत्येक तत्व को “वे सभी आपस में प्रस्तुत करने के इच्छुक हैं जिनका प्रभाव निर्दिष्ट करने के लिए अधिकतम में कम कर दिया गया है।” इस कहानी में संवाद की कमी एक अद्वितीय अंतर्निहितीकरण है जो पाठक में इच्छित भावनाएं प्रकट करने के लिए किया गया है। यद्यपि लेख में चरित्रों के लिए यदि वे एक-दूसरे से संवाद करते तो स्थिति भिन्न हो सकती थी, लेकिन सकारात्मक संवाद की आवश्यकता पर टैगोर जोर दे सकते हैं [15]।

संदर्भ

1. सामंतराय, एस. (2013). रहस्यवाद का रहस्योद्घाटन विलियम ब्लेक और रवींद्रनाथ टैगोर की कविताओं का तुलनात्मक अध्ययन। 3एल, भाषा, भाषाविज्ञान, साहित्य, 19(2)।
2. शहाणे, वी. ए. (1963)। रवींद्रनाथ टैगोररु रोमांटिकतावाद में एक अध्ययन। रोमांटिकतावाद में अध्ययन, 3(1), 53–64।
3. प्रसाद, एच. (2004)। रवींद्रनाथ टैगोर का काव्यात्मक दृष्टिकोणरु एक आलोचनात्मक प्रश्न। रवींद्रनाथ टैगोर पर अध्ययन, 1, 71।
4. हक, के. (2010)। रवींद्रनाथ टैगोर का दर्शन। एशियाटिकरु आईआईयूएम जर्नल ऑफ इंग्लिश लैंग्वेज एंड लिटरेचर, 4(1)।
5. एटकिंसन, डी. डब्ल्यू. (1984)। रवींद्रनाथ टैगोररु कवि और निरपेक्ष। धर्मध्विज्ञान में अध्ययन, 13(2), 193–205.
6. गोल्डबर्ग, ई. (2001). रवींद्रनाथ टैगोर का रोमांटिकवादरु साधना के रूप में कविता. भारतीय साहित्य, 45(4 (204), 173–196.
7. पाउंड, ई. (1913). पबिन्द्रनाथ टैगोर. पाक्षिक, 93(555), 571–579.
8. चक्रवर्ती, एम. एन. (2013). रवींद्रनाथ टैगोर और ष्विश्व साहित्यः। साहित्य और अनुवाद के परिप्रेक्ष्य में (पृष्ठ 117–133)। रूटलेज।
9. टैगोर, आर. (2004). रवींद्रनाथ टैगोर की अंग्रेजी रचनाएँरु कविताएँ (खंड 1)। साहित्य अकादमी।
10. लुईसोहन, एल. (2017). रवींद्रनाथ टैगोर का समन्वयवादी दर्शन और फारसी सूफी परंपरा। फारसी साहित्य की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका, 2(1), 2–41.
11. दासगुप्ता, टी. (1993). रवींद्रनाथ टैगोर का सामाजिक विचाररु एक ऐतिहासिक विश्लेषण। अभिनव प्रकाशन।
12. रॉय, बी. के. (1913)। रवींद्रनाथ टैगोर, भारत के सबसे महान जीवित कवि। द ओपन कोर्ट, 1913(7), 1।
13. हक, के. (2010)। रवींद्रनाथ टैगोर का दर्शन। एशियाटिकरु आईआईयूएम जर्नल ऑफ इंग्लिश लैंग्वेज एंड लिटरेचर, 4(1), 27–40।
14. गौरीशंकर, के. एस., और करजगी, एम. बी. (2017)। रवींद्रनाथ टैगोर और वॉल्ट व्हिटमैन की कविता पर एक अध्ययन, जिसमें ट्रान्सैडेंटलिज्म के तत्वों का विशेष संदर्भ दिया गया है।
15. सेन, डी. ए. (2012)। दुनिया के साथ हमारा बंधनरु रवींद्रनाथ टैगोर की कविता में प्रकृति। अंग्रेजी में भारतीय कवितारु आलोचनात्मक निबंध, 92।